वर्ष 10 अंक 9
सितम्बर 2018

वानिकी समाचार

भारतीय वानिकी अनुसंधान
एवं शिक्षा परिषद्

अनुक्रमणिका

पृ.सं.

01 महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष
03 विदेश दौरे
03 कार्यशाला / संगोष्ठी / बैठकें
04 प्रशिक्षण कार्यक्रम
06 राजभाषा समाचार
06 अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक
06 गण्यमान्य व्यक्तियों का दौरा
06 विविध
07 मानव संसाधन समाचार

महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्षः

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून

- धालुवाला मजबाटा (हरिद्वार) तथा फतेहपुर पेलिओ (सहारनपुर) से *मेलिना आर्बोरिया* तथा *ऐम्बलिका ऑफिसिनेलिस* के प्रारंभिक वृद्धि आंकड़े संकलित किए गए। दोनों स्थलों फतेहपुर पेलिओ (सहारनपुर) तथा धालुवाला मजबाटा (हरिद्वार) से मृदा नमूनों की जांच पूर्ण की गई। परियोजना ''उत्तराखंड तथा उत्तरप्रदेश में निम्नीकृत भूमियों पर *मेलिना आर्बोरिया* तथा *ऐम्बलिका ऑफिसिनेलिस* आधारित कृषिवानिकी मॉडलों का विकास'' के अंतर्गत उपर्युक्त दोनों स्थलों में *जी. आर्बोरिया* तथा *ई. ऑफिसिनेलिस* के रोपणों का अनुरक्षण एवं अनुश्रवण किया गया। धालुवाला मजबाटा (हरिद्वार) तथा फतेहपुर पेलिओ (सहारनपुर) के दोनों स्थलों से प्रारंभिक नमूनों की जांच प्रगति में है। परियोजना ''उत्तराखंड में वर्षा आधारित स्थितियों में कचनार *(बौहीनिआ वेरीअगाटा)*, भीमल *(ग्रीविआ ऑपटिवा)* तथा कदंब *(एंथोसेफेलस कदंबा)* आधारित कृषि वानिकी मॉडलों का कृषकों की भूमि पर विकास के अंतर्गत उपर्युक्त दोनों स्थलों में कचनार, भीमल तथा कदंब की रोपणियों का अनुरक्षण एवं अनुश्रवण किया गया। उत्तराखंड के वनों में उगी हुई *रोडोडेंड्रोन आर्बोरिटम* की 7 आबादियों तथा *बेटुला यूटिलिस* की 5 आबादियों की प्रधान घटक जांच (पी.सी.ए.) क्रमशः उनकी कुल फ्लेवेनाइड मात्रा तथा कुल ट्रीटेरपेनाइड मात्रा के आधार पर की गई। इन आबादियों के विभिन्न समूहों की पहचान की गई।
- परियोजना ''भारत की टेटीगोनाइडी *(आर्थोप्टेरा)* का वर्गिकी अध्ययन (ए.आई.सी.ओ.पी.टी.ए.एक्स, प.व.ज.प. मं.)'' के अंतर्गत न्यू फॉरेस्ट, तिमली, कालसी, कैम्पटी व हि.प्र. के सरहन में सर्वेक्षण तथा एकत्रण किया गया तथा प्ररूपों को पिन तथा नामित किया गया।
- चकराता, मसूरी (उत्तराखंड) तथा सरहन व सोलन (हिमाचल प्रदेश) में *पिस्टासिया इंटीग्रेरिमा* के अर्बुदों पर सर्वेक्षण एवं अवलोकन किया गया। वृक्षों में *पी. इंटीग्रेरिमा* के चिन्हित भागों पर बहुत कम अर्बुद सुस्पष्ट थे। सरहन तथा सोलन (हि.प्र.) में अर्बुद नहीं दिखाई दिए। *पी.इंटीग्रेरिमा* के वास–स्थल से पी. इंटीग्ररिमा के 10 नवांकुर तथा घासों की 5 प्रजातियां भी एकत्रित कर गमलों में रोपित की गई। परियोजना ''स्व–स्थाने पर्ण अर्बुद उत्पादन की ससिडोलॉजी एवं पौधशाला स्थापना हेतु संभावनाओं का अन्वेषण (डाबर इंडिया प्रा. लि.)'' के अंतर्गत पादप के बीज तथा कुछ अन्य परजीवियों को भी एकत्रित किया गया तथा पालन किया गया।
- *एपेनटेलस* प्रजा. की जांच हेतु स्वीपिंग विधि का प्रयोग करते हुए थानों रेंज से 10 कीट नमूने एकत्रित किए गए। थानों तथा देहरादून से *एपेनटेलस* प्रजा. के उद्गम हेतु *पौन्गौमिया पिन्नाटा, डैलबर्जिया सिस्सु* तथा *टैक्टोना ग्रैंडिस* सहित वानिकी वृक्षों से 5 कीटडिंभ नमूने एकत्रित किए गए। परियोजना ''उत्तराखंड तथा हरियाणा में कीटसुंडी परजीव्याभ, *एपेनटेलस* प्रजा. (हाइमेनोपेट्रा : ब्राकोनिड़ी) की मेजबान रेंज तथा वर्गिकी पर अध्ययन'' के अंतर्गत *एपेनटेलस* प्रजा. का प्रजाति चिन्हीकरण तथा स्लाइड निर्माण प्रगति में है।
- अंड परजीव्याभ की जांच हेतु दौरा आयोजित किया गया तथा उत्तर प्रदेश में मेरठ, अलीगढ़, फिरोजाबाद, आगरा, झांसी एवं कानपुर जिलों के विभिन्न क्षेत्रों से 60 कीट नमूने एकत्रित किए गए। परियोजना ''उत्तर भारत (हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड) से हाइमेनोपट्रेन अंड परजीव्याभ की मेजबान रेंज तथा विविधता पर अध्ययन'' के अंतर्गत *पोन्गौमिया पिन्नाटा, डैलबर्जिया सिस्सू* तथा *कैसिया फिस्टुला* सहित विभिन्न वानिकी वृक्षों से अंड परजीव्याभ के उद्गम हेतु उपर्युक्त स्थलों से 18 कीट अंड नमूने एकत्रित किए गए।
- *सी.एनयुलेरिस* का जीव विज्ञान अध्ययन एवं पालन जारी है। संक्रमित बांस प्रजातियों को क्षेत्र से एकत्रित किया गया, परीक्षित किया गया तथा जिंक, काष्ठ, चिमनी एवं बाहरी पिंजरों में रखा गया। परियोजना ''*क्लोरोफोरस एनयुलेरिस* फैब (कोलियाप्टेरा : सिरामबाइसिडी) – कटे व सूखे बांस का एक मुख्य छेदक, का महामारी विज्ञान एवं प्रबंधन के अंतर्गत व.अ.सं. के कीटालय में छेदक के प्रबंधन हेतु प्रणालीगत एवं

संपर्क कीटनाशकों के उपयोग से नियंत्रण प्रयोग किए गए।

- चकराता वन प्रभाग में अगस्त माह के दौरान एक सर्वेक्षण किया गया। 12/सी 1ए बन ओक वन; 12/सी 1बी मोरू ओक वन तथा 12/सी 1डी पश्चिमी मिश्रित शंकुधारी वन स्प्रूस, ब्लू पाइन, सिल्वर फर के 4 ट्रांजेक्टों में तितलियों के नमूने एकत्रित किए गए। विभिन्न वन प्रकारों के अंतर्गत तितलियों की प्रजातियों के आंकड़ा भंडार को, दौरे के दौरान नमूना ली गई 30 प्रजातियों के आंकड़ों में से 5 नवीन प्रजातियों के आंकड़ों को संकलित कर, 174 प्रजाति नमूनों तक अद्यतनीकृत किया गया। सर्वेक्षण के दौरान पकड़ी गई तितलियों के नये नमूनों को स्ट्रेचड, परिरक्षित तथा चिन्हित किया गया। गोविन्द वन्यजीव अभयारण्य तथा उत्तरकाशी के लिए वन प्रकारों के भौगोलिक सूचना प्रणाली आधारित मानचित्र सृजित किए गए। परियोजना ''उत्तराखंड में में विभिन्न वन प्रकारों/उप–प्रकारों से संबद्ध तितलियां'' के अंतर्गत *होरागा ओनएक्स* तितली की एक प्रजाति को जीवन इतिहास चरणों पर अध्ययनों हेतु प्रयोगशाला में पालन किया गया।
- देवबन, चकराता वन प्रभाग में खारसु ओक छेदक *रोसेलिआ लेट्रिटिआ* की व्यापकता पर आंकड़े एकत्रित किए गए। एक परजीव्याभ सहित नाशीकीट के कीटडिंभ तथा वयस्क, संक्रमित कुन्दों के साथ छेदक के के जीवनचक्र पर प्रयोग हेतु व.अ.सं. की प्रयोगशाला में लाए गए। चकराता में बन ओक वनों में मॉथ स्क्रीन का प्रयोगों कर रात्रि में पतंगों की 22 प्रजातियों को भी एकत्रित किया गया तथा चिन्हीकरण हेतु परिरक्षित किया गया। बन ओक वृक्षों से लेपीडोप्टेरा की 11 प्रजातियों के कीट सुंडी भी एकत्रित किए गए तथा जीवन इतिहास अध्ययनों के लिए पालन किया गया, जिसमें से पतंगों की 3 प्रजातियों का उद्गम हुआ जबकि अन्य इल्ली तथा कीट सुंडी चरणों में हैं। चकराता से जून में एकत्रित किए गए छेदक संक्रमित खारसु कुन्दों को, छेदक *जायलोट्रेकस बासिफ्यूलीगिनोस*, जिसके लिए आंकड़ों को कीट सुंडी चरणों में दर्ज किया गया था, पालन प्रयोगों हेतु प्रयोगशाला में रखा जा रहा था। परियोजना ''पश्चिमी हिमालय ओक के नाशी कीट तथा उनका नियंत्रण'' के अंतर्गत पश्चिमी हिमालय ओक के नाशी कीटों पर आंकड़ा भंडार को लेपीडोप्टेरा की 3 प्रजातियों पर सूचना संकलित कर अद्यतन किया गया।
- दराज संख्या 47,48,53,54,55,57 (अंश), 58, 65 तथा 66 (आंशिक) में भृंग की 630 प्रजातियों का डिजीटलीकरण किया गया तथा इन प्रजातियों की लगभग 1500 छायाचित्रों को संपादित तथा भंडारित किया गया। आंकड़ा भंडार की प्रजातियों के संपादन के लिए आंकड़ा भंडार को अद्यतन किया गया। *सेलिट्रीकोड्स जीरॉल्ट* कुल की एक नवीन युलोफिड प्रजातियों के विवरण को परिपूर्ण किया गया; परियोजना ''वन अनुसंधान संस्थान के राष्ट्रीय वन कीट संग्रह का डिजीटलीकरण एवं संवर्धन, चरण – II (सूक्ष्म कीट)'' के अंतर्गत इस कुल से संबंधित 15 प्रजातियों के लिए कुंजी को सूत्रबद्ध किया गया।
- प्रतिरोधात्मक अध्ययन हेतु पोपलर पर्ण निष्पत्रक *क्लोसटेरा क्यूप्रेटा* के जीवविज्ञान पर अध्ययन 10 पोपलर कृन्तकों पर किया गया। परियोजना ''पोपलर पर्ण निष्पत्रक *सी. क्यूप्रेटा* के विरूद्ध पोपलर कृन्तकों की प्रतिरोधात्मक हेतु जांच'' के अंतर्गत काष्ठ उत्पादन क्षति के आकलन हेतु कृत्रिम पर्ण निष्पत्रण प्रयोग किया गया।
- दर्ज आंकड़े चीड़पाइन वनस्पति क्षेत्र की तुलना में साल वनस्पतियों की मृदा से उच्च CO_2 उत्सर्जन प्रकट करते हैं। कार्बन डाई आक्साइड उत्सर्जन के उच्च मान, उच्चतर मृदा तापमान तथा मृदा नमी के तदनुरूप हैं। साल वनस्पति क्षेत्र की तुलना में चीड़पाइन वनस्पति में थोड़ा अधिक मृदा जैविक कार्बन महसूस किया गया। लेकिन, महत्ता के स्तर को अभी सांख्यिकी रूप से जाँच कर वैध किया जाना है।
- पंजाब और हरियाणा के क्रमशः मुक्तसर व कैथल जिलों के मृदा नमूनों में सभी संभावित बैक्टीरिया का आकलन करते हुए, उनमें से कुछ में गुलाबी रंग की बैक्टीरिया कॉलोनी महसूस की गई, जो *हैलोबैक्टीरियम* प्रजा. (लवण स्नेही बैक्टीरिया) हो सकती हैं। चिन्हीकरण प्रक्रिया में है।
- उत्तराखंड के चीड़पाइन तथा ओक वनों में मृदा पोषक तत्वों तथा सूक्ष्मजीवों पर पश्च वनाग्नि प्रभाव, पर प्राथमिक आकड़े संकेत देते हैं कि ग्रीष्म ऋतु में वनाग्नि पश्चात मृदा pH में आंशिक वृद्धि, EC,SOC(SOM), उपलब्ध नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा पोटैशियम में कमी होती है।
- कैम्पटी वाटरशेड (मसूरी) में जुलाई माह में 1112 मि.मी. वर्षा, 291 मि.मी. वाष्पोत्सर्जन के विरूद्ध, जो कि वार्षिक वर्षा का 46% है, दर्ज की गई। प्रवाह में सस्पेंडेड ठोस सांद्रण 67.3 मि. ग्रा.ली.$^{-1}$ तथा EC-383µS था। कुल घुलनशील ठोस की सान्द्रता 290मि.ग्रा.$^{-1}$थी। सोडियम, पोटेशियम तथा कैल्शियम की मात्रा 0.9, 0.6 तथा 20.6 पी.पी.एम. क्रमशः मापित की गई।
- कैम्पटी वाटरशेड में मृदा तापमान तथा मृदा नमी, मृदा CO_2 उत्सर्जन में मुख्य नियंत्रक कारक थे। अधिकतम मृदा CO_2 बहिः स्राव 15°C मृदा तापमान से माँपा गया जबकि इस मृदा तापमान से ऊपर, मृदा श्वसन प्रबल रूप से मृदा नमी से नियंत्रित था। मृदा CO_2 बहिः स्राव अधिकतम वर्षा ऋतु में तथा न्यूनतम शीत ऋतु में था।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

- क्षेत्र सर्वेक्षण तथा लोगों से वार्तालाप द्वारा चिन्हित महत्वपूर्ण संरक्षण उपाय निम्नलिखित हैं: (i) सामुदायिक रिजर्वों का समर्थन (ii) वन्यजीवों को पानी, चारे तथा छाँव में वृद्धि (iii) रक्षण तथा प्रबंधन हेतु लोगों की समिति या समूह का गठन (iv) बचाव केन्द्रों का उपयुक्त निर्माण (v) क्षेत्र में वन रक्षक/वन कार्मिकों का नियमित दौरा (vi) प्रभावी संचार हेतु निशुल्क आपातकालीन मोबाइल नम्बर प्रदान करना (vii) प्रभावी रोपण क्रियाकलापों तथा हरित क्षेत्र में वृद्धि, चारों उपलब्धता में वृद्धि, जानवरों के लिए वास–स्थल तथा (viii) चरागाहों का विकास तथा इसकी उत्पादकता में वृद्धि।

- पुनरूद्धार तथा वन्यजीव संरक्षण में प्रयुक्त प्रजाति प्राथमिकता में खेजरी *(प्रोसोपिस सिनेरेरिया)*, बेर *(साल्वाडोरा ओलिओइड्स)*, कुमठ *(एकेशिया सेनेगल)*, कंकेड़ा *(मायटेनस इमारजिनाटा)*, रोहिड़ा *(टेकोमेल्ला अनडूलाटा)*, नीम *(अजाडिरिक्टा इंडिका)*, देशी बबूल *(ऐकेशिया नीलोटिका)*, फॉग *(कैल्लीगोनम पोलीगोनाइड्स)* तथा मुरली *(लायसियम बार्बरम)* आदि सम्मिलित हैं। खेजरी सबसे पंसदीदा प्रजाति है।
- राजस्थान के 26 जिलों में 90 स्थानों से एकत्रित मृदा से राजोबियम की 84 किस्में पृथक की गई। जैव रासायनिक अध्ययनों ने दर्शित किया कि 14 किस्में 3% तक NaCl सहन कर सकीं। 3 किस्मों ने फॉस्फेट घुलनशील गतिविधि प्रदर्शित की। अतः यह पाया गया कि किस्में न केवल वातावरण की नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करती हैं बल्कि फॉस्फोरस की घुलनशीलता में भी सक्षम हैं। इसके अतिरिक्त 3 किस्मों ने धनात्मक काइटिनेस गतिविधि दर्शित की जो कि जैव नियंत्रण घटकों की एक विशिष्ट विशषता है जैसा कि यह काइटिन से निर्मित रोगाणु कवक की कोशिका भित्ति को निम्नीकृत कर सकती है।

हिमायलन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

- टाबो, लाहुल तथा स्पीति के शीत मरूस्थल क्षेत्र में स्थापित क्षेत्र परीक्षण में, *जूनिपेरस पॉलीकार्पोस* के नवांकुरों का उत्तरजीविता प्रतिशत 90% से अधिक पाया गया। यह इंगित करता है कि यह प्रजाति शीत मरूस्थल क्षेत्र में कृत्रिम रूप से सफलतापूर्वक स्थापित की जा सकती है तथा हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग द्वारा क्षेत्र में वनीकरण क्रियाकलापों हेतु प्रयुक्त की जा सकती है।

विदेश दौरे :

अधिकारी का नाम	संस्थान	दौरे का उद्देश्य	समयावधि	स्थान
डॉ. अनिल कुमार सेठी, वैज्ञानिक–'डी'	का.वि.प्रौ.सं., बेंगलुरू	''काष्ठ आधारित तख्तों'' पर प्रशिक्षण	10–14 सितम्बर 2018	फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट, येजिन, म्यांमार
डॉ. पंकज कुमार अग्रवाल, वैज्ञानिक–'जी'	का.वि.प्रौ.सं., बेंगलुरू	''अनुसंधान आधारित कार्यपद्धति'' पर प्रशिक्षण	17–21 सितम्बर 2018	फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट, येजिन, म्यांमार

कार्यशाला / संगोष्ठी / बैठकें :

क्र.सं.	विषय	समयावधि	लाभार्थी
	वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून		
1.	आवश्यक तेल, सुगंधित वस्तुएं तथा सुगंध चिकित्सा	5–9 सितम्बर 2018	सौंदर्य–प्रसाधनिक, ब्यूटीशियन, वैज्ञानिक, चिकित्सक, सुगंध चिकित्सक, व्यापारी, उद्यमी, उद्योगपति

व.अ.सं., देहरादून में आवश्यक तेलों, सुगंधित वस्तुओं तथा सुगंधचिकित्सा पर प्रशिक्षण – सह–कार्यशाला

	वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट		
2.	रेड्ड+ कार्य समूह बैठक	6 सितम्बर 2018	–

	वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजजन संस्थान, कोयम्बटूर		
3.	अनुसंधान अध्येताओं की दूसरी मासिक संगोष्ठी	10 सितम्बर 2018	व.आ.वृ.प्र.सं के 30 जे.आर.एफ./ एस.आर.एफ.
	हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला		
4.	स्वस्थ रोपण स्टॉक के विकास हेतु वन पौधशालाओं में नाशी–कीट व्यापकता का प्रबंधन	28 सितम्बर 2018	
	शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर		
5.	वन्य जीवों के संरक्षण तथा प्रबंधन हेतु सामुदायिक जागरूकता	5 से 15 सितम्बर 2018	480 ग्रामीण, राज्य वन विभाग, गैर सरकारी संगठन एवं कृषक
6.	वन्यजीवों के संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु रणनीतियां	28 सितम्बर 2018	100 ग्रामीण, राज्य वन विभाग, गैर सरकारी संगठन एवं कृषक

वन्यजीवों के संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु रणनीतियों पर प्रशिक्षण–सह –कार्यशाला

प्रशिक्षण कार्यक्रम :

क्र.सं.	विषय	समयवधि	लाभार्थी
	शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर		
1.	वन पौधशाला में नाशी–कीट व व्याधियां तथा उनके नियंत्रण आय	26 सितम्बर 2018	अनुसंधान तथा विस्तार विंग, सिओनी छिंदवाड़ा के 40 राज्य वन विभाग के वन रक्षक

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

2.	''जैवपूर्वेक्षण यंत्रीकरण विधियां तथा पादप रसायनिक विश्लेषण'' पर व्यावहारिक एवं क्रियाशील प्रशिक्षण	19–20 सितम्बर 2018	32 पी.एच.डी. अध्येताओं, पश्च डॉक्टोरल अध्येताओं, प्रवक्ताओं तथा अनुसंधान व विकास अध्येताओं सहित जैवप्रौद्योगिकी सूक्ष्मजैविकी, जैवरसायन, कृषि पर्यावरणीय विज्ञान के स्नातक, परास्नातक छात्र।
3.	जैवविविधता अधिनियम, 2002	26 से 28 सितम्बर 2018	वन विभाग, कृषि विभाग, पशुपालन विभाग, मत्स्य विभाग, व.आ.वृ.प्र.सं.–तकनीकी काडर अधिकारी, ग्रामीण विकास/पंचायती राज संस्थानों के 36 कार्मिक

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बेंगलुरू

4.	काष्ठ रक्षण	24–28 सितम्बर 2018	नौसेना गोदीवाड़ा, विशाखपट्टनम, भा.नौ.पो. शिवाजी, लोनावाला, निजी कार्यरत उद्योगों तथा फॉरेस्ट एकेडमी, चद्रांपुर के 16 प्रशिक्षु
5.	अकाष्ठ वन उत्पादों (पादप मूल) का मूल्य वर्धन तथा विपणन अकाष्ठ वन उत्पाद/औषधीय पादप	17 सितम्बर से 10 अक्टूबर 2018	प्रशिक्षण में 16 अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट

6.	कृमि खाद तकनीकियां तथा इसके उपयोग	7 सितम्बर 2018	बेलोनिआ, दक्षिण त्रिपुरा से 15 कृषक
7.	कौशल विकास प्रशिक्षण	10 से 21 सितम्बर 2018	20 ईरी उद्यमी तथा कृषक

व.अ.के.–आ.वि., अगरतला में कृमि खाद पर प्रशिक्षण

व.व.अ.सं., जोरहाट में ईरी उद्यमियों तथा कृषकों हेतु प्रशिक्षण

	हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला		
8.	औषधीय पादपों का संरक्षण व विकास तथा स्थानीय समुदायों के साथ लाभ साझा करना	10 से 14 सितम्बर 2018	समग्र भारतवर्ष के 13 विभिन्न राज्यों से 24 भा.व.से. अधिकारी
	वन उत्पादकता संस्थान, रांची		
9.	भारत सरकार के लाख एवं तसर की कृषि कार्यक्रम के अंतर्गत हरित कौशल विकास प्रशिक्षण	30 सितम्बर 2018	13 छात्र तथा प्रगतिशील कृषक

राजभाषा समाचार

- भा.वा.अ.शि.प. (मुख्यालय) द्वारा 14–28 सितम्बर 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर तथा व.अ.के.–आ.वि. अगरतला ने 14 सितम्बर 2018 को ''हिन्दी दिवस'' मनाया।
- उ.व.अ.सं., जबलपुर ने 14 –27 सितम्बर 2018 को हिन्दी पखवाड़ा मनाया। कार्यस्थल में हिन्दी के प्रयोग के प्रचार पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित हुए।
- शु.व.अ.सं., जोधपुर ने 14–20 सितम्बर 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया।
- हि.व.अ.सं., शिमला ने 14–28 सितम्बर 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया।

अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक:

- शु.व.अ.सं., जोधपुर में 26 सितम्बर 2018 को अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक 2018 संचालित की गई। बैठक में अनुमोदन हेतु 5 नवीन परियोजनाएं प्रस्तुत की गई। बैठक के दौरान 23 जारी परियोजनाओं (भा.वा.अ.शि.प.–17, बाह्य सहायता प्राप्त–6) पर भी प्रस्तुतीकरण दिया गया।

गण्यमान्य का दौरा :

- सुश्री स्टेफेनिया कोसटेन्जा, कान्सुलर जनरल, इटली ने 24 सितम्बर 2018 को काष्ठ कार्यचालन में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लोकार्पण हेतु का.वि.प्रौ.सं., बेगलुरू तथा ए.डब्ल्यू.टी.सी. का दौरा किया।

भा.वा.अ.शि.प.,देहरादून ने हिन्दी पखवाड़ा मनाया

शु.व.अ.सं., जोधपुर ने हिन्दी पखवाड़ा मनाया

शु.व.अ.सं., जोधपुर में अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक 2018

विविध :

संस्थान	विशेष दिन/विषयवस्तु	समयावधि
व.अ.सं., देहरादून	राष्ट्रीय वन शहीद दिवस	11 सितंबर 2018
व.व.अ.सं., जोरहाट	स्वच्छ भारत अभियान	13 तथा 27 सितंबर 2018
व.व.अ.सं., जोरहाट व.अ.के.–आ.वि., अगरतला	विश्व बांस दिवस	18 सितंबर 2018
व.अ.सं., देहरादून	विश्व ओजोन दिवस	18 सितंबर 2018

मानव संसाधन समाचार :

सेवानिवृत्ति

अधिकारी का नाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
डॉ. ए.के. शर्मा, वैज्ञानिक–'ई', व.अ.सं., देहरादून	30.09.2018
श्री ए.के. खंडूरी, स.मु.त.अ., व.अ.सं., देहरादून	30.09.2018
श्री एम.के. चंचल, अनुसंधान अधिकारी, व.उ.सं., रांची	30.09.2018
श्रीमती बी.जे. कान्थीमथी, अवर सचिव, का.वि.प्रौ.सं., बेंगलुरू	30.09.2018

संरक्षक:
डॉ. सुरेश गैरोला, महानिदेशक
संपादक मंडल:
श्री विपिन चौधरी, उप महानिदेशक (विस्तार), अध्यक्ष
डॉ. (श्रीमती) शामिला कालिया, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), मानद सम्पादक
श्री रमाकांत मिश्र, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग),सदस्य